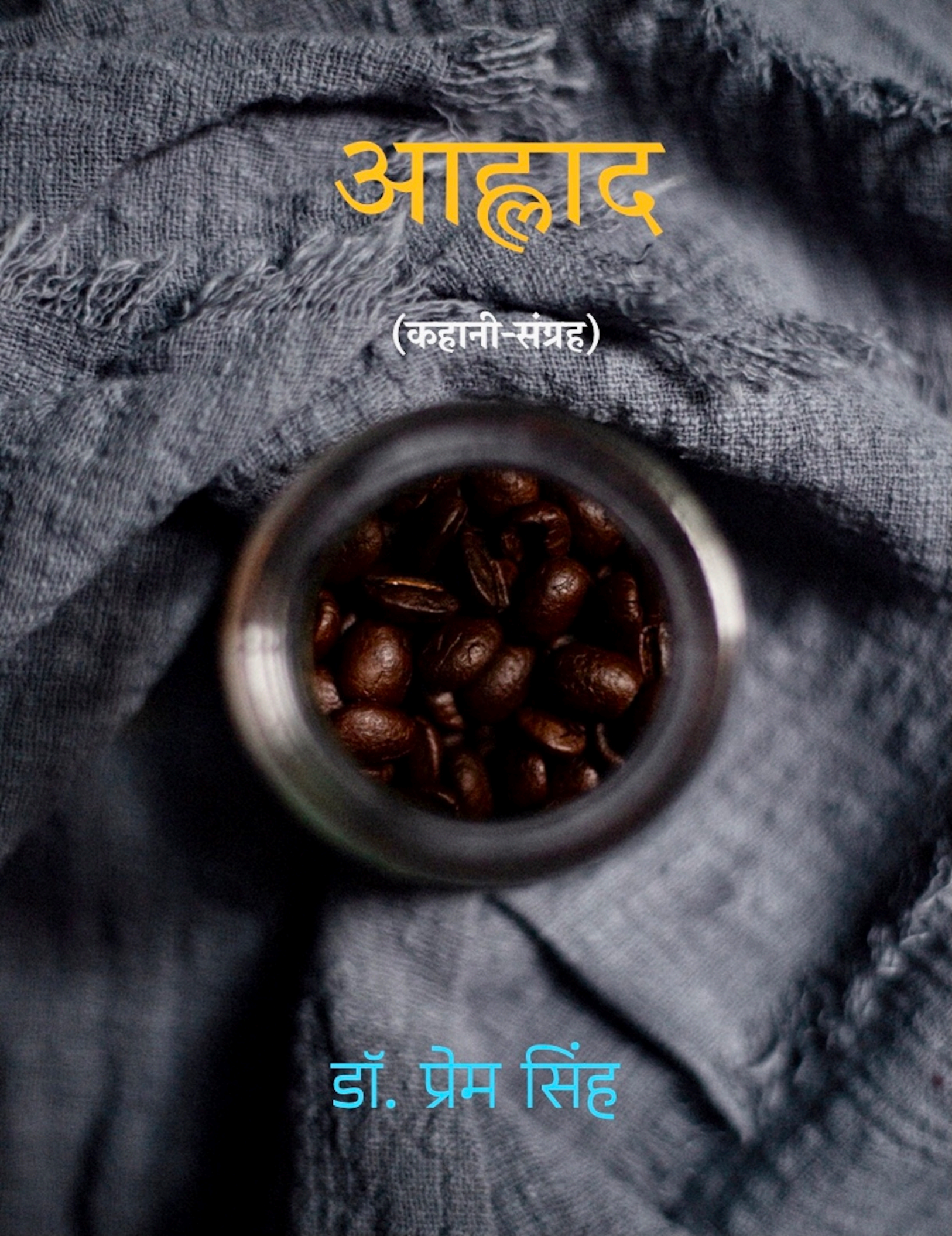

आह्लाद

(कहानी-संग्रह)

डॉ. प्रेम सिंह

आह्लाद

डॉ. प्रेम सिंह

स्वीकृति

'मैं गवाह हूँ' के पश्चात् 'आह्लाद' मेरा दूसरा कहानी संग्रह है। इस संग्रह की कहानियाँ पहले संग्रह की कहानियों से भिन्न हैं। यह युग परिवर्तित मूल्यों के स्वीकार का युग है। परिवर्तन को स्वागत भाव से लिया भी जाना चाहिए। क्योंकि जीवन अब वैसा नहीं रहा जैसा पहले जीया जाता था, इसलिए उसी के अनुरूप बदलते मूल्यों को भी स्वीकार करना होगा। व्यस्त संकुल जीवन में विषमताओं के प्रकार में भी परिवर्तन हुआ है। इसलिए बहुत समय तक अन्याय, तिरस्कार, अवहेलना, अवमानना और उपेक्षा नहीं सही जा सकती और व्यक्ति को चाहिए कि समय रहते अपनी निश्चयात्मिका बुद्धि और निर्णयात्मिका शक्ति को व्यावहारिक रूप देते हुए जीवन को सहज बनाने का प्रयास करे। दुख, कष्ट और संताप से उबरना होगा और अपने लिए सुगम रास्तों की पहचान करनी होगी। जिससे परिवार भी टूटने से बच जाए और अपनी तथा अपनी संतान की रक्षा भी हो सके। एक दूसरे का दबाव सहने की अब हिम्मत नहीं रह गई है क्योंकि अब स्त्री और पुरूष दोनों ही काम करते हैं। स्त्री अब उस तरह का अन्याय तिरस्कार या अपमान नहीं सह सकती, जो वह किन्हीं कारणों से सहती आई थी। परंतु इतना अवश्य है कि उसे अपने स्त्रियोंचित, स्वभावगत गुणों का परित्याग नहीं करना होगा और व्यर्थ की दबंगता या अतिरिक्त स्वतंत्रता से भी काम नहीं लेना होगा। पुरूष को भी स्त्री का

भरपूर सहयोग करना है। उसे बदलने में समय लग रहा है क्योंकि इतनी जल्दी वह बदल भी नहीं सकता, परंतु बदल रहा है और बदलेगा क्योंकि बिना बदले कोई चारा नहीं है।

जो भी हो जैसा भी हो एक ही बार मिलने वाले इस जीवन को अनमोल समझते हुए इसकी रक्षा तो करनी ही होगी और इसे आह्लादमय भी बनाना होगा। वास्तव में, मैं यही चाहती भी हूँ कि जीवन सुख-समृद्धि और आनन्द से भरा हुआ हो, इन कहानियों में जिन पात्रों ने अपनी नई राहें खोजी हैं, वे बधाई के पात्र है। मोड़ सदा सुखकर होना चाहिए और सड़क के साथ-साथ मुड़ना नहीं होता। जब अपना गंतव्य आए तभी मुड़ना होता है। राहें तो सभी ओर जाती है पर मुड़ तो नहीं जाया करते। जो मोड़ हमें स्वीकार करता हो और जिस ओर मुड़कर पश्चाताप न करना पड़े और लगे हाँ यह मोड़ सुखकर है उसी ओर मुड़ना होगा। संयम और संकल्प का पल्ला कभी छोड़ना नहीं होगा तभी और केवल तभी जीवन में वांछित सफलता मिल सकती है। यही सब चित्रित करने की एक कोशिश मैंने अपनी इन कहानियों में की है।

इन कहानियों को संवारने की कोई कोशिश मेरी ओर से नहीं हो पाई है अगर शिल्प के प्रति थोड़ा भी रूझान होता तो ये कहानियाँ और अधिक रोचक हो सकती थीं। पर मुझे तो अपनी बात कहने भर से मतलब होता है चाहे जैसे कही जाए। शिल्प के प्रति अपनी उदासीनता का पता तो मुझे कहानी पढ़कर चल तो जाता है पर तब कुछ किया नहीं जा सकता, क्योंकि बार-बार लिखना मेरी स्वभावगत वृत्ति के अंतर्गत नहीं आता

और एक बात ओर मेरे पक्ष में जाती हैं कि मुझे कहानीकार कहलाने का कोई शौक नहीं है निंदा या प्रशंसा की भी कोई भय या खुशी नहीं होती। हाँ अपनी बात कहे बिना रहा नहीं जा सकता इसलिए बात कहने का सबसे सशक्त माध्यम कहानी ही है ऐसा मुझे लगता है। इन कहानियों को कथ्य प्रधान कहा जा सकता है क्योंकि मेरा ध्यान सदा रहा कि कोई न कोई संदेश सूक्ष्म या स्थूल रूप से ही क्यों न हो समझ आ जाना चाहिए।

इन कहानियों को पढ़कर किसी के जीवन में थोड़ा भी निखार या आह्लाद आ जाता है तो इसे मैं अपनी सफलता मानूंगी। जब मैं इन पात्रों की जगह अपने आप को रखकर देखती थी तो रात-रात भर रो कर कट जाती थी तब लगता था कि इस संताप से कैसे निबटा जा सकता है तो कोई न कोई राह अपने आप दिखने लगती थीं और मैं कलम उठा लेती थी। समाज बहुत उन्नति कर रहा है और समाज में बहुत कुछ बहुत अच्छा हो रहा है इसलिए रोने-धोने से काम नहीं चलेगा। सारी प्रगति रूक जाएगी। यही सोचकर मुझे लगता है कि नए मूल्यों में दम है उन पर चलना होगा उन्हें वाणी देनी होगी। लकीर पीटने से काम नहीं चलेगा यही सब मुझे परेशान करता रहता था. और कलम चलती रहती थी यदि थोड़ी और संभाल कर चलाई होती तो कहानियाँ और अच्छी हो गई होती। परंतु कोई बात नहीं यह मेरी फितरत में नहीं है कि एक कहानी को दो या तीन बार लिखू। मैं तो एक बार पूरी करके ही विश्राम लेती हूँ इसलिए जो भी है, जैसा भी है आपके सामने है हर तरह की प्रतिक्रिया के लिए मेरी झोली खुली है।

धन्यवाद है भारती के लिए जिसने अपना अमूल्य समय देकर प्रूफ पठन किया साथ ही युद्धविन्द्र का जिन्होंने घर के कार्यों में भी सहयोग दिया। आभार प्रकट करना चाहूँगी श्री योगेश चन्द्र भार्गव जी का जिन्होंने इस पुस्तक को प्रकाशित कराने में अपना पूरा सहयोग दिया तथा साथ ही ‘‘मंजुली प्रकाशन’ का जिन्होंने इस संग्रह को सहर्ष प्रकाशित करने का निर्णय लिया है और यह मेरी चिरप्रतीक्षित इच्छा थी कि कोई सहर्ष प्रकाशित करे। इससे मुझे अपार संतोष मिला है। कहानियों के पात्रों को भी धन्यवाद है जो दिन रात मेरे इर्द-गिर्द घूमते रहे और तब-तक जब-तक मैं उनके अनुसार उनकी बात नहीं कह पाई। जो पाठक इन कहानियों को पढ़ेंगे उनका भी हृदय से धन्यवाद है। सबका जीवन आह्लादमय हो इस मंगल कामना के साथ संग्रह आपके हाथों सौंपती हूँ।

- डा. प्रेम सिंह

अनुक्रम

सोनम की डायरी...	8
कोख	14
सुखद आश्चर्य	29
शव के प्रति	35
अर्थहीन	39
तुम दिवाली अवश्य मनाओगे अखिल	45
और वह...	52
जो भी हुआ अच्छा ही हुआ	58
पहला प्यार	66
उंगलियाँ	72
ये आपका नितिन है न?	76
मुकदमा किस पर चलाऊं?	82
कौन कहता है मैंने गलत कदम उठाया है?	88

अगर ये रक्षा है तो... 94

कोई तो हो जो बता दे 102

क...ख...ग और मैं 108

समर्पित जीवन 111

पारखी 116

लाचारगी 122

प्रतिक्रिया 134

विडंबना 139

समय का पहिया 143

सैडिस्टिक प्लैयर 149

बेटी हो तो ऐसी 156

जब से... तब से 163

पा....सर 167